नामदेव महाराज—परिचय

सन्त नामदेव [१२७०-१३५०] का पालन-पोषण दर्ज़ियों के परिवार में हुआ था। वे महाराष्ट्र के सर्वाधिक प्रतिष्ठित सन्त-कवियों में से एक थे। मराठी भाषा में रचित उनके अभंग परमेश्वर की सर्वव्यापकता, जीवन में गुरु की आवश्यकता के महत्त्व, दिव्य नामसंकीर्तन की शक्ति तथा आध्यात्मिक पथ पर साधक को होने वाली अन्तर-अनुभूतियों का गुणगान करते हैं।

सन्त नामदेव शैव भी थे और वैष्णव भी, क्योंकि उनके श्रीगुरु नाथ सम्प्रदाय के थे और वे स्वयं भगवान विठ्ठल के भक्त थे। उन्होंने एक आदर्श जीवन व्यतीत किया और उनके परिवार के सभी सदस्य—उनकी पत्नी, चार पुत्रों व दो पुत्रियों के साथ-साथ उनकी सेविका, जनाबाई—ईश्वर-साक्षात्कारी विभूतियों के रूप में जाने जाते थे।

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।